B.A
Part-II
Paper - 3

बिहारी का अलंकार सौन्दर्य

बिहारी के काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता है, अलंकार सौन्दर्य का समावेश। अलंकारों का चमत्कार ऐसा होता है जिससे लोग तुरत वाह-वाह कर उठते हैं। यद्यपि पाठकों के हृदय पर उसका कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। बिहारी की कविता प्रेस के लिए नहीं लिखी गयी थी। वह विभिन्न सामन्तों के दरबारों के लिए लिखी गयी थी। इसलिए जहाँ एक ओर मुक्तक शैली अपनायी गयी है वहाँ दूसरी ओर अलंकारों के प्रयोग द्वारा चमत्कार उत्पन्न करने की चेष्टा की गयी।

बिहारी की अलंकार-योजना उनके काव्य में भावोत्कर्ष का साधन बन कर नहीं आयी है बल्कि स्वयं साध्य बन गयी है। अलंकार ही प्रधान हो गए हैं। भाव या वर्ण्य-विषय सर्वथा गौण है। इसलिए अलंकारों का प्रयोग अनियंत्रित रूप से हुआ है। खूब छूटकर अलंकारों की छटा दिखाई गई है। यहाँ तक कि विषय-वस्तु दब गयी है। और भावानुभूति उपमान-वैचित्र्य की चकाचौंध में डूब सी गयी है।

किंतु अलंकार योजना का कौशल देखते ही बनता है। अलंकार बिहारी की कविता में शरत्कालीन आकाश में नक्षत्रों की तरह जगमगाते दिखाई देते हैं। बिहारी की अद्भुत सूझ तथा उपमान योजना करनेवाली उनकी पैनी कल्पनादृष्टि की दाद देते ही बनता है। बिहारी के उक्तिवैचित्र्य का जादू पाठकों के सिर पर चढ़ कर बोलता है।

बिहारी का अप्रस्तुत-विधान अर्थात उपमान योजना परंपरामुक्त और रूढ़ है। संस्कृत काव्य से लेकर मध्यकालीन भक्त कवियों तक सर्वस्वीकृत और प्रचलित उपमानों को ही बिहारी ने अपने काव्य में सजाया है। बिहारी इन्हीं परंपरागत उपमानों को काव्य में सजाने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

किंतु कहीं-कहीं उपमान मौलिक और सर्वथा नवीन भी बन पड़े हैं। नीचे बिहारी के कुछ दोहों के आधार पर अनकी अलंकार योजना की विशेषताओं का अवलोकन हम कर रहे हैं। शब्दालंकारों में यमक का सुन्दर प्रयोग बिहारीलाल ने किया है –

'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौरात नर वा पाये बौराय॥

इस दोहे में कनक शब्द दो बार आया है। एक बार सोने के अर्थ में दूसरी बार धतूरे के अर्थ में। इसलिए यहाँ यमक अलंकार है। इस दोहे में समर्थनीय बात का युक्तिपूर्वक समर्थन किया गया है। इसलिए काव्यलिंग अलंकार भी है। यहाँ यमक काव्यलिंग का अंगभूत है। काव्यलिंग का एक सुन्दर उदाहरण –

मेरी भवबाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परें श्याम हरित दुति होय।

अब एक श्लेष वक्रोक्ति का उदाहरण देखिए —

"चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर की वीर॥"

यहाँ पर वृषभानुजा तथा वृषभ + अनुजा में सभंगश्लेष है, जिनके क्रमशः अर्थ निकलते हैं वृषभानु की पुत्री राधिका तथा वृषभ अर्थात बैल की बहन। इसी प्रकार हलधर बलराम का बोधक भी है और कन्धे पर हल धारण करनेवाले बैल का बोधक भी है। इस तरह श्लेष के आधार पर व्यंग्य किया गया है। नीचे लिखे उदाहरण में उपमा और तद्गुण अलंकार की छटा देखिए।

"अधर धरत हरि के परत ओठ दीठ पट जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी इन्द्र-धनुष-सी होति॥"

यहाँ बाँसुरि का इन्द्रधनुष के समान होना कहा गया है इसलिए उपमा अलंकार है। बाँसुरी उपमेय है इन्द्रधनुष उपमान है। 'सी' समानता वाचक पद है। समान धर्म का लोप है। इसलिए यहाँ धर्म लुप्तोपमालंकार कहा जाएगा। अधरों के लाल, आँखों के काले और वस्त्र के पीले रंग की छाया पड़ने के कारण बाँस की हरि बाँसुरी बहुरंगी होती जाती है। संपर्क के कारण उपमेय का रंग उपमान जैसा हो जाता है। इसलिए तद्गुण अलंकार है।

और यह देखिए उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर उदाहरण। कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन इस दोहे में अभीष्ट है। दोहा इस प्रकार है —

"मोर मुकुट की चन्द्रिकनि, यों राजत नँदनन्द।
मनु ससि सेखर के अकस, किय सेखर सत-चन्द॥"

यहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की गयी है इसलिए उत्प्रेक्षा अलंकार है। कृष्ण के मोर मुकुट की चन्द्रिकाएँ उपमेय है और शिवाजी से होड़ करने की इच्छा से कामदेव का सौ-सौ चन्द्र धारण करना उपमान है। समानतावाचक पद मनु है। और यह व्यतिरेक अलंकार का उदाहरण है —

"पावक झर तें मेह झर दाहक दुसह बिसेख।
दहै देह वाके परस, याहि दृगन ही देख॥"

यहाँ वर्षा वर्णन का प्रसंग है। मेह झरझर उपमेय है और पावक झर उपमान है। यहाँ उपमेय पानी की झड़ी को उपमान आग की लपट से अधिक दाहक बताया गया है। उपमेय को उपमान से अधिक प्रभावशाली बताया गया है इसलिए उपमेय के उत्कर्ष के कारण यहाँ व्यतिरेक अलंकार है। रूपक अलंकार का उदाहरण निम्नलिखित दोहे में देखिए।

"रही रुकी क्यों हूँ सु चलि आधिक राति पधारि।
हरति ताप सब द्यौस को उर लगि ज्यारि बयारि॥"

यहाँ कुंज-समीर (उपमेय) पर कुंजर (हाथी) (उपमान) का आरोप है। अतएव रूपक अलंकार है।

Date

'बिहारी सतसई' के अंतर्गत शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का प्रयोग हुआ है। अलंकार का प्रयोग काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए किया जाता है। यहाँ अपन्हुति अलंकार का उदाहरण देखा जा सकता है।

"धुरवा होहिं न अलि इहै, धुआँ धरनि चहुँ कोद।
जारत आवत जगत कौं पावस प्रथम पयोद॥"

यहाँ वर्षा की झड़ी को (उपमेय) को छिपाकर अथवा उसका निषेध कर (उपमान) धुआँ का कथन किया गया है। इसलिए यहाँ शुद्धापन्हुति अलंकार है। नीचे के दोहे में उदाहरण अलंकार आश्रित है।

"जगत जनायो जेहि सकल सो हरि जान्यो नाहिं।
ज्यों आँखिन सब देखिए, आँखि न देखी जाहिं॥"

यहाँ उपमेय वाक्य की पुष्टि समानान्तर उपमान वाक्य द्वारा होती है। इसलिए उदाहरण अलंकार है।

कहा जाता है कि बिहारी लाल ने अन्योक्ति अलंकार के सहारे महाराज जयसिंह की आँखें खोली थीं :-

"नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बन्ध्यो, आगे कौन हवाल॥"

सारतः कहा जा सकता है कि अलंकारों का प्रयोग करने में बिहारी सिद्धहस्त हैं। अलंकारों के प्रयोग में उन्हें विशेष सफलता मिली है। बिहारी के अलंकार इतने सटिक और लक्षण के अनुकूल होते हैं कि आज भी अलंकार ग्रंथों में विभिन्न अलंकारों के उदाहरण देने के लिए बिहारी के दोहे ही चुने जाते हैं। और यही उनकी अनन्य लोकप्रियता का कारण भी है।